पौष पुत्रदा एकादशी — चयनित पूर्ण कथा का पुनर्कथन

Pausha Putrada Ekadashi Katha — Complete Selected Chapter Retelling

Source: Sanskrit Wikisource contributors — complete chapter 41, controlling revision 336422. Also compared: Wikisource revision API — complete controlling wikitext; Creative Commons Attribution–ShareAlike 4.0 — adaptation licence; Wisdomlib Sanskrit chapter 41 — full electronic comparison; Wisdomlib / N. A. Deshpande chapter 41 — whole English comparison only; prose not copied; Wikisource rightsinfo — site-wide CC BY-SA 4.0 reuse basis.

Valkala's own retelling of the katha in Padma Purana, Uttara Khanda 6.41.1–53, Sanskrit Wikisource revision 336422, not a transcription of the original text.

पुत्रदा का नाम और सुकेतुमान की चिंता

KATHA 6.41.1–19

सफला का वर्णन सुनकर युधिष्ठिर कृष्ण से पौष शुक्ल एकादशी का नाम, विधि, देवता और हृषीकेश की प्रसन्नता पूछते हैं। कृष्ण लोकहित के लिए पहले कही विधि वाला पुत्रदा व्रत बताते हैं। नारायण इसके देवता, इच्छापूर्ति और सिद्धि देने वाले कहे जाते हैं। तीन लोकों में इस व्रत की श्रेष्ठता, पाप-नाश, विद्या और यश की धार्मिक प्रशंसा आती है।

भद्रावती के राजा सुकेतुमान और रानी चम्पका पुत्र न होने से चिंतित हैं। वंश चलाने वाला पुत्र चाहने पर भी नहीं मिलता। राजा पूछते हैं कि क्या करें, कहाँ जाएँ और पुत्र कैसे पाएँ; राज्य और नगर में सुख नहीं मिलता। दंपती रोज चिंता और शोक में हैं। कथा में पितर उनके दिए गुनगुने जल को ग्रहण करते और राजा के बाद अर्पण करने वाला न दिखने से दुखी बताए जाते हैं।

बंधु, मित्र, मंत्री, हाथी, घोड़े और पैदल सैनिक भी राजा को आनंद नहीं देते। प्रसंग पुत्रविहीन जीवन को निष्फल, घर को सूना और पितर, देव तथा मनुष्यों के ऋण को बिना पुत्र न चुकने वाला कहता है। पुत्र के लिए पूरा प्रयास, इस लोक में यश, परलोक में शुभ गति, आयु, स्वास्थ्य और समृद्धि की प्रशंसा है। पुत्र तथा संपत्ति को पुण्य और विष्णु-भक्ति से जोड़ने का कथन आता है; इन विचारों से राजा को शांति नहीं मिलती।

ये प्राचीन पुत्र-केन्द्रित सामाजिक और धार्मिक धारणाएँ छिपाई नहीं गई हैं, लेकिन अपनाई भी नहीं गईं। पुत्र न होना या बच्चे न चाहना जीवन की विफलता, पाप या कम भक्ति का प्रमाण नहीं। बेटियों और सभी परिवारों का समान सम्मान है; व्रत गर्भधारण, पुत्र, स्वास्थ्य या संपत्ति की गारंटी नहीं और किसी पर संतान का दबाव नहीं डाला जाता।

After hearing about Saphala, Yudhishthira asks Krishna the name, method, deity and pleasure of Hrishikesha for Pausha's bright Ekadashi. Krishna describes Putrada with the earlier method for people's welfare. Narayana is its deity, described as granting wishes and fulfilment. The discourse religiously praises the vow's superiority across three worlds, removal of sin, learning and fame.

King Suketuman and Queen Champaka of Bhadravati are anxious because they have no son. Despite longing, no son continues their line. The king asks what to do, where to go and how to obtain one; neither kingdom

nor city brings happiness. The couple experiences daily worry and grief. In the story ancestors receive the lukewarm water he offers and are described as distressed because they see no future offerer after him.

Relatives, friends, ministers, elephants, horses and infantry bring him no joy. The passage calls sonless life fruitless, its home empty, and debts to ancestors, gods and humans unfulfilled without a son. It urges effort for a son and praises fame here, favourable afterlife, longevity, health and prosperity. Sons and wealth are linked to merit and Vishnu devotion; these thoughts give the king no peace.

These ancient son-centred social and religious claims are disclosed, not adopted. Having no son or not wanting children does not prove failed life, sin or inadequate devotion. Daughters and all families deserve equal respect; a vow does not guarantee conception, a son, health or wealth, and no pressure to have children is imposed.

निराशा से वन की यात्रा

KATHA 6.41.20–35

सुकेतुमान सुबह और आधी रात तक चिंता करते हैं और अपने जीवन को समाप्त करने का विचार आता है। पाठ आत्मघात की दुर्गति का धार्मिक भय कहता है; फिर वे दोबारा सोचकर अपने हित की ओर मुड़ते हैं। यह संकट का वर्णन है, आधुनिक पीड़ित व्यक्ति पर परलोक का निर्णय नहीं। कोई हानि-विधि नहीं दी जाती। गहरे संकट में व्यक्ति दोष या भय नहीं, साथ और सहायता का पात्र है।

राजा घोड़े पर घने वन में जाते हैं; पुरोहित और दूसरे लोग उनके जाने को नहीं जानते। पशु-पक्षियों के बीच वे वट, अश्वत्थ, बिल्व, खर्जूर, पनस, बकुल, सप्तपर्ण, तिन्दुक, तिलक, शाल, ताल, तमाल, सरल, इंगुदी, ककुभ, श्लेष्मातक, शल्लक, करमर्द, पाटल, बदर, अशोक और पलाश नामों वाले वृक्ष देखते हैं। ये स्रोत के नाम हैं, औषधि, आहार या वनस्पति-पहचान की सलाह नहीं। संस्कृत तिलक और ताल को अंग्रेज़ी तुलना के तिल तथा छूटे ताल से बदलकर नहीं पढ़ा गया।

सियार, खरगोश, वनबिलाव, महिष, शल्लक और चमर कहे वनजीव दिखते हैं। बाँबी से आधे निकले सर्प, बच्चों सहित वनहाथी और हथिनियों के बीच चार दाँत वाले यूथपति का पुराणिक वर्णन आता है। राजा हाथियों को देखकर विचार करते और वन के आश्चर्य देखते हैं। सियार और उल्लू की आवाजें, रीछ और मृग भी आते हैं। ये न वन्यजीवों के पास जाने की सलाह हैं, न सभी प्रजातियों का निश्चित आधुनिक परिचय।

मध्याह्न में भूख, प्यास और सूखे गले से पीड़ित राजा इधर-उधर जाते हैं। वे सोचते हैं कि यज्ञ और पूजा से देवों, दान और अच्छे भोजन से ब्राह्मणों को संतुष्ट किया तथा प्रजा को पुत्रों की तरह पाला, फिर इतना दुख क्यों है। यह पात्र का प्रश्न है, निःसंतानता के नैतिक कारण का उत्तर नहीं। भोजन, पानी, सुरक्षित विश्राम और देखभाल न रोकें।

Suketuman worries from morning into midnight and contemplates ending his life. The text invokes religious fear of an adverse destiny from self-killing; he then reconsiders his welfare. This describes a crisis, not an afterlife judgment on a person suffering today. No harmful method is provided. Someone in deep distress deserves companionship and support, not blame or fear.

The king rides into dense forest without his priest or others knowing he has left. Among animals and birds he sees trees named vata, ashvattha, bilva, kharjura, panasa, bakula, saptaparna, tinduka, tilaka, shala, tala, tamala, sarala, ingudi, kakubha, shleshmataka, shallaka, karamarda, patala, badara, ashoka and palasha. These are source names, not medicinal, dietary or botanical-identification advice. Sanskrit tilaka and tala are not replaced with the English comparison's tila and omitted tala.

He sees jackals, hares, forest cats, mahisha, shallaka and chamara creatures. Serpents half-emerge from anthills; wild elephants have young, and a four-tusked herd leader stands among female elephants in the Puranic description. He reflects on the elephants and the forest's wonders. Jackal and owl cries, bears and deer also appear. These are neither advice to approach wildlife nor definitive modern identifications of every species.

At midday, hunger, thirst and a dry throat distress him as he moves about. He reflects that sacrifices and worship pleased the gods, gifts and good meals pleased Brahmins, and he cared for subjects as sons, yet why such grief? This is a character's question, not an answer assigning moral cause to childlessness. Do not withhold food, water, safe rest or care.

सरोवर, विश्वेदेव और व्रत का उपदेश

KATHA 6.41.36–48

चिंता करते आगे बढ़ने पर राजा अच्छे कर्म के प्रभाव की धार्मिक भाषा में सुंदर सरोवर देखते हैं। मछली, कमल, कारण्ड, चक्रवाक, राजहंस, मकर और दूसरे जलचर उसका वर्णन पूरा करते हैं। पास अनेक मुनियों के आश्रम हैं। दाहिनी आँख और दाहिने हाथ का फड़कना शुभ शकुन कहा जाता है; यह भविष्यवाणी का साधन नहीं।

किनारे वैदिक जप करते मुनियों को देखकर राजा आनंदित होते हैं। घोड़े से उतरकर प्रत्येक को हाथ जोड़ते और बार-बार दंडवत प्रणाम करते हैं। मुनि प्रसन्नता कहते हैं। राजा उनका नाम, परिचय और एकत्र होने का कारण पूछते हैं। वे विश्वेदेव होने और स्नान के लिए आने को कहते हैं। पाठ में माघ पाँचवें दिन निकट आने की बात है; इससे वर्तमान वर्ष, स्थान या परंपरा की नई तिथि नहीं निकाली गई।

वे आज पुत्रदा एकादशी होने और विष्णु द्वारा पालन करने वालों को पुत्र देने की धार्मिक आश्वस्ति कहते हैं। राजा अपनी चिंता रखकर पुत्र माँगते हैं। मुनि उसी दिन व्रत बताते और अभिषेक, अपनी कृपा तथा केशव के प्रसाद से पुत्र मिलने का वचन कहते हैं। विश्वेदेव नाम को अंग्रेज़ी टिप्पणी की अतिरिक्त दस नामों की सूची में नहीं बदला गया। यह चयनित कथा का संवाद है, अनिवार्य स्नान-विधि, चिकित्सा या निश्चित गर्भधारण का दावा नहीं।

Continuing in worry, the king sees a beautiful lake, introduced through religious language about good deeds' efficacy. Fish, lotuses, karanda, chakravaka, royal swans, makara and other aquatic creatures complete its description. Many sages' hermitages stand nearby. His right eye and right hand twitch, called auspicious omens; this is not a prediction tool.

Delighted to see sages repeating Vedic prayers by the shore, he dismounts, greets each with joined hands and repeatedly prostrates. They express pleasure. He asks their identity, names and reason for gathering. They identify themselves as Vishvedeva and say they came to bathe. The text speaks of Magha approaching on the fifth day; no new date for a current year, place or tradition is derived.

They identify today as Putrada Ekadashi and religiously assure that Vishnu grants sons to observers. The king shares his concern and asks for a son. The sages recommend that day's vow and promise a son through abhisheka, their favour and Keshava's grace. The Vishvedeva name is not expanded with the English footnote's extra list of ten names. This is the selected narrative's dialogue, not a mandatory ablution procedure, treatment or guaranteed conception.

पालन, जन्म और पूरा अंतिम उपदेश

KATHA 6.41.49–53

मुनियों के उपदेश से राजा पुत्रदा का व्रत करते हैं। द्वादशी में पारण करके बार-बार मुनियों को प्रणाम करते और घर लौटते हैं। कथा में रानी गर्भ धारण करती हैं। समय पर तेजस्वी पुत्र जन्मता है, अच्छे कर्म से पिता को प्रसन्न करता और प्रजा का पालन करने वाला बनता है। यह सुकेतुमान–चम्पका का पौष प्रसंग है, श्रावण पुत्रदा के महीजित–लोमश या बाद के पवित्रारोपण प्रसंग से अलग।

कृष्ण युधिष्ठिर से लोगों के हित के लिए यह श्रेष्ठ व्रत कहने की बात करते हैं। अंतिम प्रशंसा एकचित्त पालन से इस लोक में पुत्र और मृत्यु के बाद स्वर्ग कहती है। पढ़ने और सुनने का फल अग्निष्टोम यज्ञ के समान बताया जाता है। कठोर पुत्र-केन्द्रित भाषा का पूरा आशय रखा गया है, उसे आज के परिवारों के मूल्य का निर्णय नहीं बनाया गया।

अलग समापन अध्याय 41 को उत्तरखण्ड के उमापति–नारद संवाद में पौष शुक्ल पुत्रदा एकादशी कहता है; तत्काल कथा कृष्ण–युधिष्ठिर संवाद में है। सभी 53 क्रमांकित स्थान और समापन इस मौलिक संक्षिप्त गद्य में पूरे हैं। यह संस्कृत का शब्दशः प्रतिलेख, सभी लोक-रूपों का मिश्रण या पूर्ण व्रत-मैनुअल नहीं।

संतान, स्वास्थ्य, समृद्धि और परलोक धार्मिक कथन हैं, सुनिश्चित फल या चिकित्सा नहीं। निःसंतानता दोष नहीं; बेटियों और सभी परिवारों का समान सम्मान है। उपवास, जागरण, दान या खरीद आवश्यक नहीं। भोजन, पानी, विश्राम और देखभाल जारी रखें। स्मार्त और वैष्णव तिथियाँ जुड़े उत्सव-पृष्ठ पर अलग रखी हैं; इस कथा से पारण का समय या नई तिथि नहीं निकाली जाती।

Following the sages' instruction, the king observes Putrada. On Dwadashi he breaks the fast, repeatedly bows to the sages and returns home. In the account the queen conceives. In due time a radiant son is born, pleases his father through good deeds and becomes a ruler caring for subjects. This is Pausha's Suketuman–Champaka account, distinct from Shravana Putrada's Mahijit–Lomasha and subsequent pavitraropana discussion.

Krishna tells Yudhishthira that this excellent vow was described for people's welfare. The final praise assigns sons here and heaven after death to concentrated observance. Reading and hearing are assigned merit comparable with an Agnishtoma sacrifice. The full intent of the harsh son-centred language remains without making it a judgment of modern families' worth.

The separate colophon identifies chapter 41 as Pausha's bright Putrada Ekadashi within the Uttara section's Umapati–Narada dialogue; the immediate story is Krishna–Yudhishthira. All 53 numbered positions and colophon are covered in this condensed original prose. It is not a word-for-word Sanskrit transcription, blend of all popular forms or complete ritual manual.

Children, health, prosperity and afterlife are religious statements, not assured results or treatment. Childlessness is not moral fault; daughters and all families deserve equal respect. Fasting, vigils, gifts and purchases are optional. Food, water, rest and care continue. The linked hub keeps Smarta and Vaishnava dates separate; no parana clock time or new date is derived from this story.

Source licence notice (it travels with every copy of this text):

Pausha Putrada Ekadashi Katha — adapted from Sanskrit Wikisource contributors, Padma Purana 6.41.1–53, revision 336422, linked in Sources. Electronic source: CC BY-SA 4.0, https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/ . Changes: original condensed Hindi prose, full Roman-Hindi and English renditions, summaries and contextual notices by Valkala Editorial (2026). These adaptations are distributed under CC BY-SA 4.0. No source endorsement implied. This licence covers the retelling and its language layers, not unrelated code or site content. No modern Wisdomlib translation is included.
Copyright 2026 Valkala Editorial (original adaptations); shared under CC BY-SA 4.0. Attribution remains Sanskrit Wikisource contributors.